जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(शुभारंभ : १५-८-१९६९) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७,सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया एम.ए.

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया बी.कॉम.

❖ वर्ष ४६ वा ❖ अंक १२ वा ❖ ऑगस्ट २०१५ ❖ वीर संवत २५४१ ❖ विक्रम संवत २०७१

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● महामंत्र की साधना	१५	● जीवन में हमेशा अच्छे सद्विचारोंका संकल्प	८०
● शिकागो सर्व धर्म परिषद – १८९३ बॅरिस्टर श्री. वीरचंद राघवजी गांधी उल्लेखनीय सहभाग	२०	● हास्य जागृति	८१
● कव्हर तपशील	२४	● ऐसी हुई जब गुरु कृपा – इज्जत दे	८३
● महावीर गाथा	३१	● क्या पता तू रहे ना रहे	८४
● गोल्डन डायरी	४१	● संघर्ष का निदान है – अनेकान्तवाद	८५
● वाचकांचे मनोगत	४३	● अनंत शक्ति का पुँज : योग	८७
● पंचशील ग्रुप, पुणे	४५	● टाटा	८८
● महावीर सेवा संस्था ट्रस्ट – कामशेट	४५	● करु मायभूमि महन्मदा	८८
● सैध्दांतिक आणि सामाजिक दृष्टीकोणातून जैन परंपरेतील 'दान' विचार	५१	● गुरु का हमारे जीवन में महत्त्व	८९
● स्वतंत्रता : प्राप्ति और फलीतार्थ	६३	● अच्छे पॉईंटस्	९१
● क्रोध आबाद तो जीवन बरबाद	६५	● मैत्रीची हिरवळ फुलवतांना	९२
● परमात्मा की साधना	७९	● मोह का विलय कैसे करें ?	९५
		● पूना मर्चन्ट चेंबर, पुणे	१०३
		● लिला पूनावाला फाऊंडेशन स्कॉलरशीप	१०४
		● सौ. श्रेया शहा – मिसेस इंडिया	१०७

- श्री. विजयकुमार मलेचा – एकसष्ठी १०९
- मातृमंदिर अर्हम् गर्भसंस्कार केंद्र – अहमदनगर १११
- धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा १११
- मारवाडी महिला संघटना – लोणावळा ११५
- जैन साहित्य को जैनेतर विद्वानों का योगदान सूची ११७
- सुयश बातम्या १२३
- श्री. उत्तम बांठिया – अध्यक्षपदी १२७
- नाकोडा गोल्ड ॲण्ड सिल्व्हर – उद्घाटन १२७
- पुणे चातुर्मास बातम्या १२८
- चातुर्मास बातम्या १३०
- सन्मतीतीर्थ, पुणे १३३
- समझ जीने की १३४
- बिझनेसचा नवा फंडा १३६
- विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकिय बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन विशेषांकासहित

❖ पंचवार्षिक वर्गणी –१५५० रु. ❖ त्रिवार्षिक वर्गणी – ९५० रु. ❖ वार्षिक वर्गणी – ३५० रु.

(बाहेरगावच्या चेकला १०० रु. जास्त) ❖ या अंकाची किंमत ३० रुपये.

❖ वर्गणी व जाहिरात रोखीने/on line/RTGS/AT PAR चेक/पुणे चेकने/मनीऑर्डर/ड्राफ्टने/'जैन जागृति' नावाने पाठवावी.

● www.jainjagruti.in ● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

हे पत्रक संपादक, प्रकाशक, मुद्रक व मालक श्री. संजय कांतीलाल चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, पर्वती, पुणे ९ येथे छापून ६२, ऋतुराज सोसायटी, पुणे ३७ येथे प्रसिद्ध केले. लेखकांच्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवायीसाठी पुणे न्यायालय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

'जैन जागृति' – वर्गणी बँकेत भरू शकता

जैन जागृति मासिकाची वर्गणी रोखीने, मनीऑर्डरने, पुणे चेक, ॲट पार चेक, ड्राफ्टने पाठवावी किंवा 'भारतीय स्टेट बँक' मध्ये जैन जागृति खात्यात वर्गणी भरू शकता. बँकेच्या पे स्लीपवर 'जैन जागृति' लिहावे. बँकेचा तपशील पुढीलप्रमाणे

STATE BANK OF INDIA Branch - Market Yard, Pune.
Current A/c No. : 10521020146 IFS Code : SBIN0006117

आपण जर वर्गणी बँकेत भरली तर वर्गणी भरल्यानंतर पे स्लीपची झेरॉक्स बरोबर आपला ग्राहक क्रमांक, पूर्ण नाव, पत्ता, मोबाईल नंबर ऑफीस मध्ये पाठवावे अथवा बँकेची स्लीप स्कॅन करून E-mail : jainjagruti1969@gmail.com वर पाठवावी. ई–मेलमध्ये ग्राहक क्र., पूर्ण नाव, पत्ता, फोन, मोबाईल नंबर द्यावा म्हणजे आपल्या नावाने वर्गणी जमा केली जाईल.

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

पंचवार्षिक	१५५०/–रु.	त्रिवार्षिक	९५०/–रु.	वार्षिक	३५०/–रु.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३, **मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१ www.jainjagruti.in**

Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- **भोसरी, चिंचवड, निगडी –** श्री. चांदमलजी लुंकड – फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९
- **पुणे शहर ❖ जळगाव –** श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- **गुरूवार पेठ, पुणे –** श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- **धनकवडी, पुणे –** श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५, ९९२२१११९६७
- **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे –** निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- **वडगाव शेरी, पुणे –** सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- **वडगाव मावळ, पुणे –** श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- **खडकी, पुणे –** श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- **सासवड, हडपसर, पुणे –** श्री. राजेश प्रदीपजी कुवाड, मो. ९०२८५६६९७२
- **औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव –** श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- **दापोडी, पुणे –** श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- **नांदेड सिटी, पुणे –** श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
- **दौंड, श्रीगोंदा –** श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे – ९८९०७२३४०२
- **अहमदनगर –** श्री. महेश एम. मुनोत– मो. ९४२०६३९२३०
- **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका –** श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- **सोनई –** श्री. मदनलालजी सी. भळगट – फोन : ०२४२७–२३१४६१
- **औरंगाबाद –** श्री. सुभाषचंदजी मांडोत–फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- **मुंबई** खारघर– श्री. मदनलालजी गांधी–मो. ९८२०५३६७९३
- **धनसोली, नवी मुंबई –** श्री. सुभाष केशरचंदजी गादिया, मो. ९१५८८८८६८५
- **नाशिक –** श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३–२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- **नाशिक –** मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- **बीड –** श्री. अतुलकुमार शरदचंद्रजी कोटेचा, मो. ९९६००२४२२४
- **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- **श्रीरामपूर –**श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- **लासलगाव –** श्री. मनसुखजी साबद्रा, मो. : ९३२६३२५३४७
- **बारामती–** डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२–२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- **अंमळनेर, जि. जळगाव –** श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- **धुळे –** श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- **शहादा, जि. नंदुरबार –** श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- **कुर्डुवाडी, जि. सोलापूर–** श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ९९६०००००२५
- **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर –** श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- **मिरज, जि. सांगली –** श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- **कोल्हापूर –** सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१–२५४२२५३
- **सातारा व सातारा जिल्हा –** श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

महामंत्र की साधना

लेखक : पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकर विजयजी गणिवर्य
हिन्दी अनुवाद : आचार्य श्री रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा. *(क्रमशः)*

१४८. अनन्य उपकारी श्री तीर्थंकर भगवंत

इस जगत् में जो कुछ सुख है, सुख के कारण बननेवाले जो कुछ शुभ कार्य हो रहे हैं, वे सब तीर्थंकर देवों के कारण ही हैं। जगत् के जीव जो कुछ सुख पा रहे हैं, उसमें श्री तीर्थंकर भगवंतों का ही उपकार है।

पुण्यकर्मों के उदय से सुख मिलता है। शुभ प्रवृत्ति से पुण्यबंध होता है। शुभ प्रवृत्ति (कार्य) शुभ अध्यवसाय से ही होती है। अब विचार करने की यह बात है कि जीव यह शुभ अध्यवसाय कैसे करे?

अनादि काल के असत् अभ्यास तथा मलिन वासनाओं के बल के कारण जीव की वृत्ति पाप करने की होती है। ऐसी स्थिति में उसमें श्रेयस्कर कार्य करने की प्रवृत्ति सहज रीति से जगे, यह संभावना लगभग असंभव लगती है।

समग्र भवचक्र में एक बार भी अधिगम के बिना सम्यक्त्व पाकर मोक्ष पानेपाले जीवों की संख्या मरुदेवी माता की तरह विरल ही होती है। ऐसा होने पर भी, उन्हें भी समवसरण ऋद्धि का दर्शनरूप अधिगम तो था ही। अधिगम की प्रेरणा से जीव श्रेयस्कर कार्य में लग जाता है।

पाप के लिए आलंबन की आवश्यकता नहीं होती है। या पाप के आलंबनों से यह जगत् भरा हुआ है।

उपदेश के बिना पुण्य नहीं होता है। उपदेश के लिए वचन की शक्ति चाहिए। सिद्धांत अशरीरी होते हैं, इसलिए वे स्वयं उपदेश नहीं दे सकते हैं। उपदेश तो मुख्य रूप से अरिहंत भगवंत ही देते हैं। वे अपने वचनातिशय से अनेक जीवों को उपदेश देकर सत्य प्रवृत्ति में लगा सकते हैं।

जगत् में मोक्षमार्ग और उस मार्ग के प्रतीक मंदिर, मूर्ति, उपाश्रय, शास्त्र, संघ आदि श्री अरिहंत भगवंतों के प्रभाव के कारण ही है। अरिहंत बनने के लिए आवश्यक सामग्री भी तीर्थंकर भगवंत ही देते हैं।

तीर्थ और उसके प्रतीक, उपदेश के बिना निर्माण नहीं होते हैं। उपदेश देने के लिए जो पुण्यबल चाहिए वह तीर्थंकर भगवंतों के पास ही है। इसलिए आज हम जो भी साधना कर सकते हैं, उन सबके पीछे श्री तीर्थंकर भगवंतों का ही उपकार है। यह बात निरंतर ध्यान में रखनी चाहिए।

जिनका इतना बड़ा उपकार है, उन्हें भूल कर या उन्हें स्वीकार न करके कोई भी आत्मा उन्नति के पथ पर आगे बढ़ नहीं सकती है। आत्मविकास के मार्ग पर आगे बढ़ने की पहली शर्त यह है कि हम सत्य को स्वीकार करें, उपकारी के प्रति नम्रता और कृतज्ञता भाव रखें, अनुपकारी के प्रति मध्यस्थता विकसित करें। ऐसा किए बिना कषाय मंदता, अंतर्मुखता और ऐसे अन्य आध्यात्मिक सद्गुणों की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

श्री तीर्थंकर भगवंत हम सबके अनंत उपकारी हैं। जीवन या जगत् में जो कुछ भी अच्छा है, वह सब उनके ही प्रभाव से है। इसलिए कल्याण की कामना रखनेवाले जीवन को उनके स्मरण, मनन, चिंतन, भजन और पूजन में अपना समय व्यतीत कर अपने जीवन को सार्थक करना चाहिए।

श्री तीर्थंकर परमात्मा को भूलकर ही जीव भव में भटक रहा है, भ्रमिक है और जहाँ-तहाँ दुख पा रहा है।

श्री तीर्थंकर परमात्मा जैसे नाथ का जो भजन करता है, वही सच्चा सनाथ है।

१४९. शास्त्राज्ञा में बँधा धर्म

''आणाए धम्मो'' का सामान्य अर्थ धर्म शास्त्राज्ञा से बंधा हुआ है, यह होता है। और उसका विशेष अर्थ धर्म अंतरात्मा की आज्ञा से बँधा हुआ है यह होता है। क्योंकि शास्त्र सिर्फ दिशा सूचित करते हैं, दिशा की पसंदगी हमें ही निश्चित करनी होती है।

अपनी शुध्द बुध्दि से हुई पसंदगी से धर्म आत्मसात् होता है, आत्मसात् धर्म सम्यक्त्व में परिणत होता है और सम्यक्त्व के साथ होनेवाले सभी अनुष्ठान मुक्ति साधक बनते हैं।

ज्ञानपूर्वक क्रिया का अर्थ है आत्मौपम्य दृष्टि के साथ जीवन में अप्रमाद। अर्थात् चार प्रकार की सामायिक १. सम्यक्त्व सामायिक २. श्रुत सामायिक ३. देशविरति सामायिक ४. सर्वविरति सामायिक।

मधुर परिणाम सम्यक्त्वरूप है, तुला परिणाम ज्ञानरूप है और खीरखांडयुक्त परिणाम चारित्ररूप है। इस प्रकार आज्ञा के आंतर-बाह्य स्वरूप में यथार्थरमणता विकसित कर व्यक्ति धर्म आराधक बनता है।

जैनधर्म परमात्मा को पूर्ण और शुध्द ज्ञानमय, परम आत्मभाव को पाया हुआ मानता है। यह धर्म परमात्मा को जगत् प्रकाशक रूप में स्वीकार करता है। अर्थात् जैन धर्म परमात्मभाव पाने के लिए परमात्मा के भजन का सच्चा मार्ग बताता है।

परमात्मभाव पाने का सच्चा मार्ग बहिरात्मभाव से निकलकर अंतरात्मभाव में आना और अंतरात्मभाव में स्थिर होकर परमात्मभाव का अंतर में भावन करना है। इसलिए तप, त्याग, संयम और मैत्री आदि साधना में निमग्न रहना और इस साधना में मार्गदर्शक के रुप में परम उपकारी के रूप में प्रभु को हृदय में स्थापित करना चाहिए।

हिंसा आदि पाप को पाप न मानना यह मिथ्यात्व है। पाप की छूट होना यह अविरति है। असंयम, प्रमाद, कषाय और योग ये कर्मबंधने के कारण हैं।

श्री जिनेश्वरदेवों की आज्ञा, इससे बचने का मार्ग बतानेवाली होने से कल्याणकारी है।

जिनाज्ञा पालन के अध्यवसाय से हिंसा आदि आस्त्रवों से बचने के लाभ के साथ साथ परोपकारी श्री जिनेश्वरदेवों का अत्यंत विनय तथा बहुमान होता है, यह निर्जरा का हेतु है। श्री जिनाज्ञा पालन के अध्यवसाय से अशुभ का संवर और विनय से बड़ी मात्रा में कर्मनिर्जरा होती है।

मनुष्य के लिए मान कषाय दुर्निवार सिध्द है। यह आठों प्रकार के कर्मों का बंध कराता है। योग्य आत्मा के प्रति विनय में मान कषाय का प्रतिकार होने से, विनय को आठ कर्मों का क्षय करने वाले परमगुण के रूप में वर्णित किया गया है।

एक विनय गुण में मोहनीय आदि दुष्ट कर्मों का क्षय कराने का सामर्थ्य है। इसलिए शास्त्रवचन है 'विनयमूलो धम्मो।'

श्री जिनाज्ञा के पालन से इस विनय का भी पालन होता है। श्री जिनाज्ञा का भंग करने से अविनय, उद्दंडता और अशुभ कर्मों की परंपरा से आत्मा लिप्त होती है। इसलिए श्री जिनाज्ञा सभी कालों और क्षेत्रों में आराध्य है, उपयुक्त है।

नम्र जीव ही सुरक्षित ढंग से उत्थान के मार्ग पर चढ़ सकते हैं।

१५०. धर्मध्यान के द्वार

धर्मध्यान करने के लिए कई मर्यादाएँ होती हैं। उस संबंध में बारह द्वार निम्नांकित हैं-

१. भावना द्वार :- दर्शन, ज्ञान, चारित्र और वैराग्य चाहिए।

२. प्रदेश :- एकान्त और साधना के लिए योग्य भूमि चाहिए।

३. आसन :– शरीर की अवस्था (स्थिरता) सुखकारक होनी चाहिए।

४. काल :– संध्याकाल।

५. आलंबन :– पठन, पृच्छा, प्रश्न, पुनरावर्तन और आवश्यक आदि चाहिए।

६. क्रम :– शरीर, वाणी और मनोगुप्ति।

७. ध्यातव्य :– ध्येय–अर्हं, ओंकारादि।

८. ध्याता :– अप्रमादी, निर्मोही–ज्ञानी।

९. अनुप्रेक्षा :– स्वाध्याय, ध्यान।

१०. लेश्या :– तेजो, पद्म और शुक्ल।

११. लिंग :– आज्ञा–रुचि आदि।

१२. फल :– आत्मज्ञान, शुद्धात्मा का साक्षात्कार।

जैसे द्वार से मंदिर में प्रवेश कर सकते हैं, वैसे ही इन बारह द्वारों से **'धर्मभवन'** में प्रवेश कर सकते हैं। ये प्रत्येक द्वार सर्व मंगलकारक धर्म के द्वार हैं। उसके साथ संबंध दृढ़ करना हितकारी है।

२. धर्मध्यान की स्थिरता :–

चार भावनाओं और चार शरणों द्वारा धर्मध्यान स्थिर होता है।

भावनाओं से धर्मध्यान गुणसमृध्द बनता है और शरण से स्थिरता आती है।

पहली शरण :– श्री अरिहंत। श्री अरिहंत की शरण ग्रहण करने से चार घाती कर्मों से रहित शुद्ध आत्म–अवस्था प्राप्त करने में आगे बढ़ सकते हैं।

दूसरी शरण :– श्री सिद्ध परमात्मा। श्री सिद्ध परमात्मा की शरण में जाने से चार घाती और चार अघाती इस प्रकार कुल आठों प्रकार के कर्मों से रहित होने के लिए आत्मवीर्य स्फुरायमान होता है।

तीसरी शरण :– श्री साधु भगवंत। श्री साधु भगवंतों की शरण स्वीकार करने से पाँच प्रकार के आस्रव से रहित होने की योग्यता विकसित हो सकती है।

चौथी शरण :– केवली प्ररूपित धर्म। धर्म की शरण यानी अठारह पापस्थानकों से रहित, परम विशुद्ध और सचराचर व्यापी शब्दातीत शक्ति की शरण।

जो जिसकी शरण में जाता है, वह उसके जैसा होता है। जैसा संग वैसा रंग। जैसी संगति, वैसा परिणाम!! यह न्याय यहाँ काम करता है।

इन चार शरणों को मंगल का महाकेंद्र कहा गया है। मैत्री आदि चार भावनाएँ उसमें आवश्यक सहायता प्रदान करती हैं।

१५१. आत्मौपम्या भाव

व्यवहार से सम्यग्दर्शन गुण की प्राप्ति जैन कुल में जन्म मिलने से कही जा सकती है। लेकिन ग्रंथिभेद जनित निश्चय से सम्यग्दर्शन गुण की प्राप्ति तो जीव को प्रबल पुरुषार्थ से ही हो सकती है। उसकी प्राप्ती के समय अपूर्व आनंद का अनुभव होता है।

सम्यग्दर्शन तत्त्वरुचि रूप है। सम्यग्दर्शन की दस प्रकार की रूचियों में तत्त्वरुचि के बाद धर्मरुचि, संक्षेपरुचि, विस्तारुचि आदि हैं। इन सब रुचियों में तत्त्वरुचि मुख्य है।

तत्त्वों में भी आत्मतत्त्व मुख्य है। आत्मतत्त्व के दर्शन होना दुर्लभ है। सामान्य धर्म से आत्मतत्त्व को जाने बिना विशेष धर्म से आत्मा के ५६३ प्रकार जानते हुए भी निश्चय से ज्ञान या श्रद्धा उत्पन्न नहीं होती है।

'अध्यात्मसार' के वैराग्यभेद प्रकरण में कहा गया है कि–

एकांतेन हि षट्काय–श्रध्दानेऽपि न शुद्धता।
संपूर्णपर्यायलाभात् यत्र याथात्म्य–निश्चयः ।।

विशेष के बिना सामान्य ज्ञान या सामान्य के बिना विशेष ज्ञान असंभव है।

हमें जीवों के विशेष प्रकार का बोध होता है, लेकिन सामान्य से जीवत्व एक प्रकार का है, ऐसा

अभेद बोध नहीं होता है। शायद कभी हो जाए तो भी वह साधनोपयोगी नहीं बनता है। इससे हमारा धर्म मैत्र्यादिभाव से संयुक्त बनना चाहिए, वह नहीं बन पाता है।

१५२. मैत्रीभाव का माहात्म्य

आत्मौपम्य या अभेद की दृष्टि आए बिना अहिंसा या क्षमा आदि धर्म, धर्मरूप नहीं बन सकते हैं।

अभेद की दृष्टि प्राणिमात्र के प्रति मैत्रीभाव विकसित होने से ही पुष्ट हो सकती है। ऐसा मैत्रीभाव विकसित होने पर ही दुखी का दुख दूर करने की करुणावृत्ति, गुणाधिक्य के प्रति प्रमोदवृत्ति और अपात्र के प्रति माध्यस्थ या तटस्थ वृत्ति संभव है। ऐसी वृत्ति आने पर ही अहिंसा और क्षमा आदि धर्म सार्थक बन सकते हैं अर्थात् क्षायोपशमिक भावना बन सकती है।

१५३. सम्यग् दर्शन गुण का आवरण

सामान्य और विशेष दोनों धर्मों से आत्मतत्त्व का बोध होता है, तभी सम्यग् दर्शन गुण की प्राप्ति सुलभ बन सकती है और तभी दर्शनगुण का आवरण हट सकता है।

दर्शनावरणीय कर्म का क्षयोपशम मिथ्यात्व अवस्था में भी सुलभ है। आत्मा के आत्मौपम्य भाव से दर्शन होना, सम्यग् दर्शनगुण है।

इस गुण को ढकनेवाला दर्शन मोहनीय कर्म, तीव्र और प्रबलतम पुरुषार्थ दिखाए बिना नहीं हट सकता है। जब तक इस कर्म का उदय रहता है, तब तक नौ पूर्वों का ज्ञान या करोड़ पूर्व का चारित्र भी मिथ्याज्ञान रूप या सिर्फ कायाकष्ट रूप बनता है। शास्त्रकार महर्षि यही बात कहते हैं।

इसलिए दर्शन गुण को प्रकट करने के लिए जागरूकता से और श्री जिनाज्ञा अविरत प्रयत्न आवश्यक हैं।

१५४. आत्मौपम्यभाव की भूमिका

अध्यात्मशास्त्र मानते हैं कि अव्यवस्था जगत् में नहीं, बल्कि, जीव में स्वयं में होती है। उसे दूर करने पर जगत् व्यवस्थित, न्यायपूर्ण, आनंदमय और नियमबध्द जान पड़ता है। उसमें दोष निकालने योग्य कुछ भी नहीं लगता है। इसलिए ऐसी दृष्टिवाला जीव शांति का अनुभव करता है और अपने दोष जिन कारणों से हैं, उन्हें दूर करने के लिए वह अपने समय और शक्ति का यथार्थ रूप में सदुपयोग कर सकता है।

राग, द्वेष और मोह दोष हैं।

मोह अज्ञान, संशय और विपर्यय रूप है। वह उसके प्रतिपक्षी ज्ञान, श्रद्धा और चारित्र से टलता है।

यहाँ मोह का अर्थ आसक्ति या राग नहीं समझना चाहिए क्योंकि राग को एक स्वतंत्र दोष के रूप में बताया गया है। इसलिए मोह शब्द अज्ञान, संशय और विपर्यय का वाचक है।

वस्तु मात्र का यथार्थ रूप उत्पाद, व्यय और ध्रोव्य युक्त है। अनुभव और युक्ति से बार-बार चिंतन के द्वारा वह दोष नष्ट हो जाता है।

कषाय और संक्लेशजन्य विकृति से मुक्त होकर जीव जैसे-जैसे अध्यवसायों की विशुद्धि पाता है, वैसे वैसे अन्य जीवों के साथ आत्मौपम्य भाव अधिक स्पष्ट होता जाता है और वह जीवन में भी उतरता जाता है।●

(क्रमश:)

महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत स्वस्त मार्ग

जैन जागृति

शिकागो सर्वधर्म परिषद १८९३ आणि वीरचंद गांधी

आपण जैन आहोत याचा आपल्याला अतिशय अभिमान वाटतो. या विषयी आजकाल व्हॉटस्अप वर सतत मेसेज फिरत असतात. आपणही गौरवाच्या भावनेने ते मेसेज फॉरवर्ड करतो, चांगले आहे. परन्तु आपल्या धर्माचा, समाजाचा इतिहास या बाबतीत काय? आपणास आपल्या इतिहासाची किती माहिती आहे? माहिती घेण्याचा किती प्रयत्न करतो? आपणास त्या बद्दल किती आवड आहे? या बाबत विचार केला तर मामला गंभीर आहे.

जैन धर्म हा अतिप्राचीन भारतीय धर्म आहे. भारत देशाच्या जडण-घडणीत, संस्कृतीत जैन धर्मियांचा फार मोठा वाटा आहे. परंतु धर्म संघर्षात झालेल्या पिछेहाटीत आपला गौरवशाली इतिहास झाकोळला गेला आहे. साधरणत: लिखाण, साहित्य यामध्ये आम्हाला विशेष रूची नसल्याने आम्हाला आमच्या इतिहासाचे योग्य ते ज्ञान नाही. आमच्या पूर्वजांचे ऐतिहासिक कर्तृत्व, कार्य जाणीवपूर्वक दुर्लक्षित केले गेले आहे, केले जात आहे. स्व. निर्मलकुमारजी फडकुले यांनी जैन समाजास उद्देशून म्हटले होते की, 'जो समाज आपल्या इतिहासाला विसरतो त्याला इतिहास विसरतो.' याची जाणीव ठेवणे आवश्यक आहे असे वाटते.

ज्यांच्या नावावरुन देशाला भारत नाव पडले आहे ते पौराणिक काळातील पहिले चक्रवर्ती राजा भरत, इतिहासातील पहिले चक्रवर्ती राजा चंद्रगुप्त मौर्य, खाखेलचे जैन राज घराणे, वीर सेनापती भामाशाह, कर्नाटकातील पराक्रमी राणी अबक्का आदी बद्दल आमची माहिती काय आहे? स्वातंत्र्याच्या लढ्यातील जैन हुतात्म्यांची, स्वातंत्र्यवीरांची आम्हाला किती माहिती आहे? आम्ही महाराष्ट्रीयन आहोत, ज्या मराठी भाषेचा आम्हाला गौरव आहे. त्या मराठी भाषेचा जैन धर्माशी काय संबंध आहे, प्राचीन मराठी भाषा कोणत्या नावाने ओळखली जात होती याची कितपत माहिती आम्हाला आहे. प्राचीन भारतात जैनांची संख्या कोटीत असताना आता ती लाखात का आहे? जैनांची संख्या आता का कमी-कमी होत आहे. याचा आपण विचार केला आहे का? आपण जैन म्हणून डावलले जात आहोत, आपणावर अन्याय होतो याची आपणास जाणीव आहे का?

प्राचीन कालापासून जैन समाजाच्या अनेक कर्तृत्ववान व्यक्ति होवून गेल्या, आताही आहेत. परंतु त्याचे कर्तृत्व, कार्य, पराक्रम हे सर्व प्रसिध्दी पासून, नोंदी पासुन दूर ठेवले गेले, जात आहे जैन धर्माचे स्वतंत्र अस्तित्व आणि अस्मिता या बाबत समाजात जागृती व्हावी अशी अरिहंत जागृती मंच, पुणे ची भावना आहे. त्या करिता अशाच एका कर्तृत्ववान, जैन भूषण बॅ. वीरचंदजी राघवजी गांधी यांच्या कर्तृत्वाचा थोडासा परिचय सोबत देत आहोत. ●

राजेंद्र सुराणा,अरिहंत जागृती मंच, मो. ९३७१०२३१६१

वीरचंद गांधी

औद्योगिक क्रांतीनंतर जगात सर्वत्र बदलाचे वारे वाहू लागले. त्या पार्श्वभुमीवर १८९३ साली शिकागो येथे औद्योगिक मेळाव्याचे आयोजन करण्यात आले होते. या मेळाव्यात केवळ उद्योगधंद्याचा समावेश नव्हता तर काव्य, संगीत, शिक्षण, वाड्मय, तत्त्वज्ञान आणि धर्म या विषयांचाही समावेश होता. केवळ भौतिक प्रगतीवरच भर दिला जाऊ नये म्हणून काही उदारमतवादी धर्म गुरुंनी सर्व धर्मांच्या प्रतिनिधींना बोलावून एका परिषदेचे आयोजन करण्याचा विचार केला. शिकागो येथील एक शिक्षण तज्ज्ञ चार्लस् सी.बोनी यांच्या

नेतृत्वाखाली ही धर्मपरिषद प्रत्यक्षात साकार झाली.

श्री. बोनी यांच्या नेतृत्वाखालील समितीने दोन वर्षे कठोर मेहनत घेऊन सर्वधर्मपरिषदेचे यशस्वी आयोजन केले. जगभरातल्या सर्व धर्मप्रतिनिधींशी दोन वर्षे सतत पत्रव्यवहार करून त्यांची या परिषदेसाठी मान्यता मिळविण्यात आली. या भव्य परिषदेच्या प्रत्यक्ष आयोजनाची जबाबदारी शिकागो येथील प्रमुख रेव्ह. जॉन हेन्री बारोस यांच्यावर सोपविण्यात आली. शिकागो येथील कलासंस्थेतील 'कोलंबस' सभागृहात दि. ११ सप्टेंबर १८९३ रोजी परिषदेला सुरुवात झाली.

उद्घाटनाच्या भव्य सोहळ्यास चार हजार पेक्षा अधिक लोक उपस्थित होते. तर सात हजार पेक्षा जास्त लोकांनी एकंदर परिषदेस हजेरी लावली. आपल्या उद्घाटनपर भाषणात श्री. सी.सी. बोनी यांनी या दिवसाचे वर्णन– ''वंशावंशातील संघर्ष संपुष्टात येऊन, जगामध्ये धार्मिक शांतता आणि बंधुभावाचा दरवळ पसरविणारा युगप्रवर्तक दिवस'', अशा अलंकारित भाषेत केले. श्री. बारोस यांनी आपल्या स्वागतपर भाषणात भारताचा उल्लेख 'विविध धर्मांची पवित्र जननी' अशा गौरवपूर्ण शब्दात केला.

या परिषदेसाठी जरी सर्व धर्मांच्या प्रतिनिधींना बोलाविण्यात आले होते. तरी त्यात ख्रिश्चन धर्माच्या प्रतिनिधींचा अधिक भरणा होता. परिषदेत सादर करण्यात आलेल्या १९४ पेपर्स पैकी १५३ पेपर्स हे ख्रिश्चन धर्मांच्या प्रतिनिधींकडून वाचण्यात आले होते. 'ख्रिश्चन धर्माच्या प्रसाराचा हेतू परिषदेचा असावा,' असे वाटण्यासारखी परिस्थिती होती. पौर्वात्य प्रतिनिधींना बोलावले, हे अनेक ख्रिश्चन धर्मप्रतिनिधींना आवडले नव्हते. पूर्वेकडील विद्वानांमुळे ख्रिश्चन धर्माचे नुकसान होईल असे त्यांना वाटत होते. 'ख्रिश्चन धर्म हाच सर्वश्रेष्ठ धर्म असून, ख्रिश्चन असल्याशिवाय देवाच्या राज्यात प्रवेश मिळणे असंभव आहे,' असे प्रतिपादन अनेक ख्रिश्चन धर्मगुरूंनी केले. यापुढे जाऊन काही प्रतिनिधींनी इतर धर्म आणि धर्म श्रद्धांवर खरमरीत टीका करण्यासही मागेपुढे पाहिले नाही.

मात्र अनेक ख्रिश्चन प्रतिनिधींनी पौर्वात्य धर्माचे आणि त्यांच्या सखोल आध्यात्मिक विचारसरणीचं मनापासून कौतुकही केले. काहींना पुढील धर्मपरिषद ही भारतात व्हावी अशी इच्छाही व्यक्त केली. १७ दिवस चाललेली ही परिषद २७ सप्टेंबर १८९३ रोजी दिमाखात संपन्न झाली. आपल्या समारोपाच्या भाषणात श्री. सी.सी. बोनी म्हणाले, 'काही वादविवाद झाले असले तरी एकंदरीत ही परिषद मैत्रीपूर्ण वातावरणात पार पडली, यात शंका नाही.'

या धर्म परिषदेत जैन धर्माचे एकमेव प्रतिनिधी म्हणून मुंबईचे श्री. वीरचंद राघवजी गांधी हे सहभागी झाले होते. २९ वर्षाच्या या अभ्यासू युवकाचे या परिषदेतील योगदान हे लक्षणीय आणि कौतुकास्पद असेच होते. पाश्चिमात्यांना जैन धर्माची ओळख करून देणारी पाहिली व्यक्ति म्हणून श्री. वीरचंद गांधी यांची नोंद इतिहासाला घ्यावीच लागेल. देवावर दृढ विश्वास असणाऱ्या ख्रिश्चन जनसमुदायाला, 'निरीश्वरवादी' पण उच्च आध्यात्मिक मूल्ये असणारा जैन धर्म श्री. वीरचंद गांधी यांनी अत्यंत समर्थपणे समजावून सांगण्याचे महान कार्य केले. धर्मपरिषदेत भारतीय धर्म आणि भारतीय लोकांविषयी जे आक्षेप घेतले गेले त्याला श्री. गांधी यांनी अगदी सडेतोड उत्तर दिले. पाश्चिमात्यांचे भारतीयांविषयी असणारे गैरसमज दूर करण्याचे फार मोठे कार्य श्री. वीरचंद गांधी यांनी केले.

श्री. वीरचंद गांधी यांना १४ भाषा अवगत होत्या. जगातील अनेक धर्मांचे त्यांना सखोल ज्ञान होते. हिंदू लोक, हिंदू धर्म, हिंदू चालीरिती या विषयी झालेल्या टीकेला त्यांनी, ज्या पध्दतीने उत्तर दिले, त्यावरुन वैदिक परंपरा आणि इतर दर्शनाचांही त्यांचा गाढा अभ्यास असल्याचे दिसून येते.

त्यांच्या अभ्यासु आणि वक्तृत्वाची योग्य दखल

घेत, अमेरिकेतील अनेक धुरीणांनी आणि वर्तमानपत्रांनी त्यांचे मनसोक्त कौतुक केले. धर्मपरिषद संपल्यानंतरही त्यांची विविध ठिकाणी वेगवेगळ्या विषयांवर व्याख्याने आयोजित करण्यात आली. दोन टप्प्यांमध्ये एकंदर सात वर्षे त्यांनी अमेरिकेत वास्तव्य केले. आपल्या व्याख्यानांनी त्यांनी अनेकांची मने जिंकली. त्यांना तेथे अनेक मित्र व समर्थक लाभले.

जैन धर्म आणि पौर्वात्य तत्त्वज्ञानाच्या प्रसारासाठी त्यांनी अमेरिका आणि इंग्लंड येथे विविध संस्था स्थापन केल्या. त्याच बरोबर भारतीय स्त्रियांच्या शिक्षणासाठीही एक संस्था स्थापन केली. श्री वीरचंद गांधी यांनी अमेरिकेत जी विविध विषयांवर व्याख्याने दिली त्यातील काही विषय पुढील प्रमाणे :- जैन धर्म, हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, भारतीय संस्कार आणि उत्सव, भारताचा इतिहास, भारतीय जातीव्यवस्था, भारतीय स्त्रियांचे स्थान, जैन धर्म आणि विश्व, ख्रिश्चन धर्म आणि मांसाहार, प्राणायाम, योग, ध्यानधारणा, विस्मयजनक स्मरणशक्ती, संमोहनशास्त्र वगैरे, वरील विषयांची नामावली पाहिली तरी श्री. वीरचंद गांधी यांचा बुद्धीचा आणि अभ्यासाचा प्रचंड आवाका लक्षात येतो आणि थक्क व्हायला होते. अशा प्रकारे विविध व्याख्याने, लेख, संस्था याद्वारे श्री. वीरचंद गांधी यांनी भारतातील विविध धर्म, भारतीय तत्त्वज्ञान, भारताचा समृद्ध वारसा आणि परंपरा पाश्चिमात्यांना ओळख करुन दिली.

इ. स. १८९६ साली भारतात भीषण दुष्काळ पडला. त्यावेळी श्री. वीरचंद गांधी अमेरिकेत होते. त्यांना भारतातील दुष्काळासंबंधी कळताच त्यांनी अमेरिकेत एक दुष्काळ सहाय्यक संस्थेची स्थापना करून रू. ४०,०००/- जमा करुन भारतात पाठविले. तसेच अन्नधान्य भरलेले एक जहाजही भारतात पाठविले. अशाप्रकारे श्री. वीरचंद गांधी यांना आपल्या देशबांधवांविषयी असलेली कळकळ आणि त्यांच्या हृदयात असलेली मानवता यांचे आनंददायी दर्शन होते.

श्री. वीरचंद गांधी यांचे भारतातील कार्यही अतिशय महान आहे. तो एक स्वतंत्र लेखाचा विषय आहे. अशा या ज्ञानसंपन्न व्यक्तिस धर्म प्रसारासाठी परदेशवारी करण्यास काही सनातनी जैनांनी विरोध केला आणि ते भारतात परत आल्यावर त्यांना धर्मबहिष्कृत करण्याची मागणी केली, हे समजल्यावर धक्काच बसतो! अर्थात श्री. आत्मारामजी महाराजसाहेब, श्री प्रेमचंद रायचंद यासारख्या दिग्गजांच्या भक्कम पाठिंब्यामुळे आणि स्वत:वरील विश्वासामुळे श्री. वीरचंद गांधी आपली अमेरिकेतील भूमिका अत्यंत यशस्वीपणे पार पाडू शकले. अमेरिकेतही त्यांनी आपल्या आचरणात जराही शिथिलता येऊ दिली नाही.

अशा या जैन धर्मीय भारतमातेच्या महान सुपुत्राचे वयाच्या ३७ व्या वर्षीच अल्पशा आजाराने, आपल्या जन्मप्रदेशातच निधन झाले, हे वाचून हळहळ वाटल्याशिवाय रहात नाही. पण जेव्हा केव्हाही जैन धर्माच्या प्रसाराचा इतिहास लिहिला जाईल. तेव्हा श्री. वीरचंद गांधी यांच्या जैन धर्माविषयीच्या योगदानाचा उल्लेख अनन्यसाधारण असाच असेल यात शंका नाही.●

प्रेषक:श्रीपाल कुं. ललवाणी, पुणे, मो. ९८२३९७७४७२

अरिहंत जागृती मंच, पुणे
बॅरिस्टर श्री वीरचंद गांधी-प्रदर्शन

अमेरिकेत सन १८९३ मध्ये झालेल्या पहिल्या विश्व धर्म परिषदेत सहभागी झालेले जैन धर्माचे अधिकृत प्रतिनिधी व जैन समाजातील पहिले बॅरिस्टर वीरचंदजी राघवजी गांधी यांच्या १५१ व्या जयंती निमित्त २५ ऑगस्ट २०१५ रोजी त्यांचे कार्य परिचय दर्शविणारे एक प्रदर्शन पुण्यात अरिहंत जागृती मंच, पुणे तर्फे आयोजित करण्यात येणार आहे.

हे प्रदर्शन विविध मंदीर, स्थानकात दाखवले जाणार आहे. प्रदर्शनासाठी संपर्क - श्री राजेंद्र सुराणा, पुणे. मो. : ९३७१०२३१६१ ●

कव्हर तपशील, ऑगस्ट २०१५

❖ **बॅरिस्टर श्री. वीरचंद गांधी**

जैन धर्माचे गाढे अभ्यासक व विचारवंत बॅरिस्टर श्री वीरचंद राघवजी गांधी १८९३ मध्ये शिकागो येथे झालेल्या सर्व धर्म परीषदे मध्ये जैन धर्माचे प्रतिनिधी म्हणून सहभागी झाले होते. श्री गांधी यांनी पाश्चिमात्यांना अत्यंत समर्थपणे जैन धर्म समजावून सांगण्याचे महान कार्य केले. २५ ऑगस्ट २०१५ रोजी त्यांची १५१ वी जन्म जयंती सर्वत्र साजरी केली जाणार आहे.

❖ **पंचशील ग्रुप, पुणे**

मुख्यमंत्री श्री देवेंन्द्र फडणवीस यांच्या न्यूयार्क दौऱ्यात पुण्यातील पंचशील ग्रुप आणि अमेरिकेतील ब्लॅकस्टोन ग्रुपबरोबर महाराष्ट्र शासनाने पुणे आणि मुंबईतील आयटी पार्कच्या विकासासाठी ४५०० कोटी रुपये गुंतवणुकीचा करार केला. करारावर स्वाक्षरी करतांना मुख्यमंत्री श्री देवेंन्द्र फडणवीस, उद्योगमंत्री श्री सुभाष देसाई, पंचशील ग्रुपचे श्री. अतुल चोरडिया आदी मान्यवर.

❖ **श्री. उत्तमजी बांठिया, पुणे – अध्यक्षपदी**

लायन्स क्लब ऑफ पुणे गणेशखिंडच्या अध्यक्षपदी पुणे येथील युवा कार्यकर्ते श्री. उत्तमजी बांठिया यांची एकमताने निवड झाली. लायन्स क्लबचे माजी आंतरराष्ट्रीय संचालक ए.पी. सिंग, महाराष्ट्राचे प्रांतपाल लायन्स श्रीकांत सोनी, उपप्रांतपाल लायन्स चंद्रहास शेट्टी यांनी उत्तम बांठिया यांचा सन्मान केला.

❖ **दि पूना मर्चन्ट चेंबर, पुणे**

दि पूना मर्चन्ट चेंबर पुणे च्या अध्यक्षपदी श्री प्रवीणजी चोरबेले यांची एकमताने निवड करण्यात आली. निवड जाहीर झाल्यावर श्री प्रवीण चोरबेले यांचा सत्कार करताना सर्वश्री पोपट ओस्तवाल, रायकुमार नहार, अशोक लोढा, राजेंद्र बांठिया, बाळू धोका, अजित बोरा, संजय चोरडिया, मनसुख कर्नावट इ. मान्यवर.

❖ **श्री. विजयकुमार मर्लेचा – एकसष्टी**

ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्ते विजयकुमार मर्लेचा यांचा एकसष्टी निमित्त मानपत्र देवून गौरव करताना रसिकलाल धारिवाल, शोभाताई धारिवाल, उद्योगपती डी.एस.कुलकर्णी, आमदार माधूरी मिसाळ, ॲड. भास्करराव आव्हाड, उल्हास पवार, अंकुश काकडे, गोपाल चिंतल आदि.

❖ **सोनीबाई मुथा चषक – पुणे**

पुणे येथे बाबुराव सणस मैदानावर मातोश्री सोनीबाई दगडुरामजी मुथा चषकासाठी महाराष्ट्र स्टेट ॲथलेटीक्स चँपियनशीप दि. २१ ते २३ जुलै २०१५ रोजी घेण्यात आली. पार्कऑन्स ग्रुप हस्ते संचालक श्री. परागजी मुथा, श्री सचिनजी जाधव, श्री. सतिशजी मुथा, श्री चिरागजी मुथा यांच्या तर्फे पारितोषिके देण्यात आली.

❖ **होरायझन डेव्हलपर्स, पुणे – गृहोत्सव**

पुणे येथील होरायझन डेव्हलपर्स तर्फे २७,२८ जून रोजी गृहिणी गृहोत्सव साजरा करण्यात आला. यावेळी मिसेस इंडिया विजेत्या सौ. श्रेया सिध्दार्थ शहा यांचा सन्मान सर्वश्री श्रीपालजी, सतिशजी, प्रदीपजी, राजेंद्रजी, पुनितजी ओसवाल यांनी केला.

❖ **डेक्कन होंडा, पुणे – होंडा जैज लॉन्च**

होंडा कार्स इंडिया लिमिटेडने नवीन थर्ड जनरेशन होंडा जैज कार नुकतीच लॉन्च केली. पुणे येथील होंडा कार्स इंडिया लिमिटेडचे डिलर्स ''डेक्कन होंडा'' येथे या गाडीचे लॉन्च भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाले. यावेळी गाडी लॉन्च करतांना श्री सतीशजी, श्री राजेंद्र, श्री. संजय, श्री. हेमंत, श्री. अजय, श्री. अभय व बाफना परिवार.

❖ **विजय ज्वेलर्स – उद्घाटन**

पुणे येथील श्री. विजय व श्री. सुभाष जैन यांनी पार्श्वनाथ गोल्ड मार्केट, रविवार पेठ येथे सुवर्ण

दागिण्याचे होलसेल भव्य दालन ''विजय ज्वेलर्स'' सुरु केले आहे. मातोश्री माणकीबाई रिखबचंदजी जैन व कटारिया परिवारांच्या हस्ते शोरुमचे उद्घाटन करण्यात आले.

❖ **नाकोडा गोल्ड ॲण्ड सिल्व्हर – उद्घाटन**
पुणे येथील प्रसिध्द सराफ श्री फुलचंदजी रामसिना यांच्या रविवार पेठ येथील नाकोडा गोल्ड ॲन्ड सिल्व्हर या तीन मजली शोरुमचे उद्घाटन करतांना मातोश्री उकीबाई खुमाजी रामसिना, श्री. फतेचंदजी रांका, श्री. फुलचंदजी रामसिना इ. मान्यवर.

❖ **सौ. श्रेया शहा, पुणे – ''मिसेस इंडिया''**
पुणे येथील सौ. श्रेया सिद्धार्थ शहा यांची दिल्ली येथे झालेल्या इंडिया एक्झीझीट पीजेन्ट स्पर्धेत ''मिसेस इंडिया'' या किताबासाठी निवड झाली. भारतातील २० राज्यातून स्पर्धकांनी यात भाग घेतला होता. स्त्रियांचे सौंदर्य, बुध्दिमत्ता व सामाजिक कार्य या सर्वांतून मिसेस इंडियाची निवड करण्यात आली.

महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत स्वस्त मार्ग...

जैन जागृति

जैन जागृति

परस्परोग्रहो जीवानाम्

जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत स्वस्त मार्ग – जैन जागृति

जैन जागृतित जाहिरात देऊन जैन समाजाशी संवाद साधा.

पर्युषण विशेषांक - सप्टेंबर २०१५

सप्टेंबर २०१५ ला प्रकाशित होणाऱ्या पर्युषण विशेषांकासाठी २० ऑगस्ट २०१५ पर्यंत जाहिरात पाठवा

आर्ट पेपर वर रंगीत (Colour) जाहिरात	
• पूर्ण पान	• रु. ८५००/-*
• १/२ पान	• रु. ४६००/-*
*डिझाईन व पॉझेटिव्ह खर्च वेगळा	(रु. ७००/-)

व्हाईट पेपरवर एका रंगात (Black & White) जाहिरात	
• पूर्ण पान	रु. ४०००/-
• १/२ पान	रु. २४००/-
• १/४ पान	रु. १२५०/-
• १/८ पान	रु. ८००/-

आजच्या स्पर्धेच्या युगात जाहिरात ही अत्यावश्यक बाब झाली आहे. जैन समाजात ''जैन जागृति'' हे सर्वांत प्रभावी माध्यम आहे. आपल्या व्यवसायाची जाहिरात ''जैन जागृति'' मध्ये द्या.

अनुरुप वधू पाहिजे

नाव : समीर चंद्रप्रकाशजी सिंघवी
श्वेतांबर जैन स्थानकवासी
जन्मदिनांक : २६-१-१९८४
स्थान : मुंबई, उंची : ५'.९'
अल्पघटस्फोटित (३ महिने)
शिक्षण : B.E. Mechanical,
MBA CFA Level III (USA)
व्यवसाय : Manager Rating CRISIL
Ltd., Mumbai.
साका : स्वत: - सिंघवी, मामा-मुथ्था (धुपिया)
अपेक्षित वधू : अनुरुप
संपर्क : चंद्रप्रकाशजी बीजराजजी सिंघवी
B - १३०३ महावीर ज्योती, सेक्टर नं. १०
खारघर, नवी मुंबई - ४१०२१०
मो. : ९४२२११६५६९, ९८३३५२६५६९